हिंदी उपन्यास में लोक-संस्कृति

संपादक

पूनम सिन्हा

त्रिविक्रम नारायण सिंह

हिन्दी उपन्यास में लोक संस्कृति

सम्पादक

पूनम सिन्हा

त्रिविक्रम नारायण सिंह

समीक्षा प्रकाशन

दिल्ली/मुजफ्फरपुर

ISBN : 978-93-87638-85-3

प्रथम संस्करण
2020

सर्वाधिकार ©
सम्पादक

प्रकाशक
समीक्षा प्रकाशन
जे.के.मार्केट, छोटी कल्याणी
मुजफ्फरपुर (बिहार)–842 001
फोन : 09334279957, 09905292801
E-mail : samikshaprakashan@yahoo.com
www : samikshaprakashan.blogspot.com
samikshaprakashan.in

दिल्ली कार्यालय
आर-27, रीता ब्लॉक
विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली–92
मो.-07970692801

पृष्ठ-सज्जा
सतीश कुमार

मुद्रक
बी०के० ऑफसेट,
शाहदरा, दिल्ली।

मूल्य
400.00 (चार सौ रुपये)

Hindi Upanas Me Lok Sanskriti
Edited by **Poonam Sinha** **Rs. 400.00**

अनुक्रम

सम्पादकीय.... 05

- भारतीय संस्कृति लोक संस्कृति में जीवंत है : डॉ. मृदुला सिन्हा 11
- डॉ. रांगेय राघव के उपन्यासों में लोक संस्कृति : डॉ. उषा किरण खान 19
- लोक जीवन और उपन्यास : प्रो. सत्यकाम 24
- उपन्यास और लोक-संस्कृति : रेवती रमण 43
- घरवास : लोक जीवन से साक्षात्कार : पूनम सिन्हा 49
- सुर बंजारन : लोक से विलुप्त होते सुरों की धड़कन : पूनम सिन्हा 57
- हिंदी उपन्यासों में लोकसंस्कृति : रामधारी सिंह दिवाकर के उपन्यासों में लोकसंस्कृति : हरिनारायण ठाकुर 69
- हिन्दी उपन्यासों में लोक-संस्कृति के विविध आयाम 'देहाती-दुनिया' के संदर्भ में : प्रो. सुधा बाला 78
- लोकसंस्कृति का ऐतिहासक दस्तावेज अगन हिंडोला : प्रो. मंगला रानी 88
- लोकजीवन को सहेजने वाली कथाकार : उषा किरण खान : सुनीता गुप्ता 94
- आंचलिक उपन्यास में लोक-संस्कृति : डॉ. शैल कुमारी वर्मा 101
- मैला आँचल में लोक संस्कृति की झलक : डॉ. त्रिविक्रम ना. सिंह 107
- फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में लोक संस्कृति के विभिन्न चित्र : डॉ. धीरेन्द्र प्रसाद राय 116
- अमृतलाल नागर के उपन्यासों में लोक संस्कृति : डॉ. कल्याण कुमार झा 124
- लोक जीवन की यथार्थवादी एवं आदर्शवादी चेतना का सच्चा दस्तावेज 'मैला आंचल' : स्वर्णिम शिप्रा 133
- आँचलिक उपन्यासों में लोक-संस्कृति : पल्लवी कुमारी 142
- 'गोदान' में लोक-संस्कृति : स्मृता 148
- प्रेमचन्द के उपन्यासों में लोक-संस्कृति : उमेश मल्लिक 153

- 'गोदान' में निहित लोक-संस्कृति के चित्र : रवि कुमार 157
- नागार्जुन के उपन्यासों में लोक-संस्कृति : डॉ. इन्दिरा कुमारी 161
- काशीनाथ सिंह के उपन्यासों में लोक संस्कृति : डॉ. दुर्गानन्द यादव 168
- रामधारी सिंह दिवाकर के उपन्यासों में लोक-संस्कृति : वेदांत चंदन 176
- अनामिका के उपन्यासों में लोक-संस्कृति : सिन्धु कुमारी 182
- हिंदी उपन्यास में लोक-संस्कृति : शिव प्रिया 188
- भगवानदास मोरवाल के उपन्यास 'हलाला' में लोकसंस्कृति : रेशमी कुमारी 191
- रेणु के उपन्यासों में लोक संस्कृति : स्मिता कुमारी 194
- संस्कृति की सामासिकता : डॉ. वीणा शर्मा 198
- आंचलिक उपन्यासों में लोक-संस्कृति : विनीता कुमारी 205

संगोष्ठी प्रतिवेदन 210

■

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में लोक संस्कृति

डॉ. कल्याण कुमार झा

लोक शब्द संस्कृत धातु 'लोक' से जन्मा है। अर्थ है नजर डालना, देखना अथवा प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना। दूसरा अर्थ है दुनिया, संसार, जगत, सृष्टि आदि है इसमें सृष्टि का अर्थ लोक संज्ञा से सम्बोधित किया जाता है जिसका अर्थ जनमानस से है। कोषगत अर्थों को देखने से यह कहा जा सकता है कि 'लोक' शब्द विशाल, व्यापक, विस्तार तथा समष्टि के सम्पूर्ण मानव समाज के लिए प्रयुक्त होता रहा है। इस प्रकार लोक शब्द का सामान्य अर्थ समस्त जनसमुदाय की समग्र सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश को अर्थापन करती है।

संस्कृति शब्द संस्कृत भाषा की धातु 'कृ' (करना) से बना है। इसे अँग्रेजी में 'कल्चर' कहते हैं। अत: संस्कृति शब्द का संबंध लैटिन भाषा से जोड़ने पर परिष्कार, विकसित करना, जोतना एवं पूजा करना प्राप्त होता है। संस्कृति का संबंध संस्कार से भी है, जिसका अर्थ शुद्धि की प्रक्रिया है। जो... आन्तरिक अनुभूतियों से संबंधित होता है। संस्कृति जीवन जीने की विधि है। जिसमें हम सोचते हैं, कार्य करते हैं व अनेक गतिविधियों को पूरा करते हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मानव जीवन की प्रत्येक गतिविधियाँ, रहन-सहन संस्कृति के अन्तर्गत आ जाती है। मानव की सभी उपलब्धियाँ संस्कृति होती हैं। इसमें कला, संगीत, साहित्य, शिल्प-कला, धर्म, वस्तु-कला, विज्ञान सभी संस्कृति के अन्तर्गत ही आ जाते हैं। भारतीय संस्कृति 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' की कल्पना करता है जो मानवता के विरासत को संभाले हुए है। व्यापक स्तर पर संस्कृति 'वसुधैव कुटुम्बकम' के सूत्र के साथ विश्वलोक के साथ जुड़ जाता है।

लोक संस्कृति शब्द अंग्रेजी के 'फोक लोर' (थ्वसा स्वतम) से बना है। 'फोक लोर' दो शब्दों के प्रयोग से बना है। 'फोक' (थ्वसा) और 'लोर' (स्वतम) फोक का अर्थ लोग जनसाधारण और लोकबाग या विशेष प्रकार के लोग से माना जाता है। लोर (स्वतम) शब्द का अर्थ नॉलेज अर्शात् ज्ञान या विधा से होता है। इस प्रकार 'फोक लोर' का अर्थ सामान्य जनता से माना जाता है। लोक संस्कृति का संबंध किसी देश के सामान्य जनसमुदाय से होता है। उनके समाज में प्रचलित लोक विश्वास, रीति-रिवाज, खान-पान संस्कार, प्रथा, रहन-सहन, जादू-टोना, भूत-प्रेतों की दुनिया आचार-विचार, ताबीज, शकुन-अपशकुन, रोग, जन्म-मृत्यु के संबंध में मानव की अंध परंपराएँ समाहित होती है। इतना ही नहीं नृत्य, गीत, त्योहार, विवाह, खेल आदि भी इसके अंतर्गत आते हैं। लोक संस्कृति के संबंध में बद्रीनारायण ने कहा है- "लोकायतन (व्यापक संस्कृति) समूहोन्मुख एवं परम्परा आधारित वह संस्कृति है जो समुदाय के लोगों की रचना एवं उनकी इच्छाओं एवं आकांक्षाओं की संवाहिका तथा उनकी सांस्कृतिक अस्मिता की परिछाया भी है। इसके मूल्य एवं मानक मौखिक रूप से प्रवाहित होते है। भाषा साहित्य, संगीत, नृत्य, खेल, कर्मकाण्ड, संस्कार, दस्तकारी, 'वस्तु कृति एवं अन्य' कलाएँ इसके रूप होते हैं।"[1]

लोक संस्कृति के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं आर्थिक व्यवस्था भी निरंतर गतिशील रहती है। इस प्रकार कह सकते हैं कि संस्कृति व्यक्ति एवं समाज के विकास की परिचायक है। संस्कृति समाज को आकार देती है तो इसी आकार में लोकजन फल-फूल कर नाना प्रकार की उपलब्धियों को हासिल करता है। लोक संस्कृति मानव सभ्यता की निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो सामाजिक-सांस्कृतिक विकास को अभिव्यक्त करता है- "लोकायन के इन्हीं परिभाषाओं से संवाद करते हुए ही लोकायन के अध्ययन की विभिन्न पद्धतियाँ विकसित हुई हैं। इनमें एक ओर सौन्दर्य शास्त्रीय एवं ऐतिहासिक भौगोलिक जैसी थोड़ी पुरानी पड़ चुकी प्रविधियाँ हैं तो दूसरी ओर संरचनावाद एवं उत्तर आधुनिकता जैसी अत्याधुनिक प्रविधियाँ भी हैं।[2]

बहुआयामी, बहुस्पर्शी प्रतिभा के धनी अमृतलाल नागर प्रसिद्ध उपन्यासकार के रूप में विख्यात हैं। इनके उपन्यास हिन्दी साहित्य में

कथायोजना की नई परंपरा के लिए भी विख्यात हैं। प्रेमचन्द के बाद हिन्दी कथा साहित्य को समृद्ध करनेवाले उपन्यासकारों में अमृतलाल नागर एक स्थापित नाम है, जिनके लेखन कर्म को नकारा नहीं जा सकता। अमृतलाल नागर परंपरावादी या लोक संस्कृति के उपन्यासकार माने जाते हैं जो इनके गंभीर लेखन कर्म को दर्शाता है। साहित्य साधक के रूप में नागरजी निर्विवाद रूप से मान्य हैं। इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ निम्न हैं- "अमृतलाल नागर के 'शतरंज के मोहरे' में अवध की नवाबी का ह्रासोन्मुख जीवन सम्पूर्णता से चित्रित है, किन्तु नवाब गाजीउद्दीन हैदर के अन्तर्द्वन्द्व में आधुनिक मनोवैज्ञानिक दृष्टि सम्पन्न कलाकार का मानस प्रतिच्छायित है। सात घूँघट वाला मुखड़ा (1968 ई.), एकदा नैमिषारण्ये (1972 ई.), मानस का हंस (1972 ई.), खंजन नयन (1981 ई), करवट (1985 ई.), पीढ़ियाँ (1990 ई.) आदि उपन्यासों में भी नागरजी ने अतीत को वर्तमान से जोड़ने की कोशिश की है।"[3]

अमृतलाल नागर उन लेखकों की कोटि में आते हैं जो परंपरावादी हैं और आधुनिकतावादी भी हैं। परम्परावादी इस अर्थ में भी कि वे अपने देश की गौरवमयी अतीत तथा उस अतीत के जीवन्त उपलब्धियों के प्रति आस्थावान हैं। आधुनिक इस अर्थ में कि नये जीवन की वैज्ञानिक भूमिकाओं को भी उन्होंने उतनी ही आत्मीयता से अपनाया है। ये समन्वयवादी लोकसंस्कृति के उपन्यास लेखक हैं। इनके उपन्यासों में लोक जीवन का उन्मुक्त प्रवाह है जो इन्हें एक संवेदनशील साहित्यकार के रूप में स्थापित करता है।

सामाजिक दायित्व के प्रति सहज अमृतलाल नागर, ईमानदार, आशावादी, मानवतावादी, संवेदनशील, प्रयोगधर्मी, जनवादी तथा लोकहितवादी उपन्यासकार हैं। जो व्यापक रूप से उनके लोक संस्कृतिवादी व्यक्तित्व को मुखरित करता है।

'बूँद और समुद्र' नागर जी की उत्कृष्ट कृत्तियों में से एक है, जिसमें नागर जी ने कथा के माध्यम से जीवन के दर्शन को जीवंत किया है। यह एक प्रतीकात्मक उपन्यास है जिसमें 'बूँद', 'व्यक्ति' का और 'समुद्र' 'समाज' का प्रतीक है। बूँद से समृद्ध बनने की कथा में जीवन के गंभीर दर्शन भी हैं तो दार्शनिक चिंतन भी। नागर जी ने बड़ी कुशलता

से मनुष्य और मनुष्यता की [illegible] में मानवीय चेतना को समाहित करते हुए लोक को आलोकित कर अंधकार दूर करने का अथक प्रयास किया है। अपनी इस कृति में सामान्यता और विशिष्टता को समेटते हुए न ही परंपरा को नकारा है और न ही आधुनिकता से मुँह मोड़ा है। [illegible] पर विश्वास रखते हुए व्यक्ति और समाज के समस्या को सुलझाने और चित्रित करने का प्रयास किया है। उनके इस व्यापक 'जीवन दर्शन' के कारण यह अनूठी कृति है।

'बूँद और समुद्र' उपन्यास बनते बिगड़ते भारतीय पारिवारिक परम्पराओं एवं संस्कृति व बदलते हुए लोक सांस्कृतिक बोध का उपन्यास है। जो सामाजिक जीवन को आधार बनाकर लिखा गया है। साहित्य में समाज का बहुमूल्य योगदान है, जिसमें लोक और समाज मिलकर संगठनात्मक रूप में कल्याण करते हैं। यह यथार्थ के फलक पर रचा गया उपन्यास है। जिसमें सामाजिक चिंतन के साथ व्यक्तित्व चित्रण भी है। जो रामजी और पागल रोगियों का निमंत्रण होली के अवसर पर किया गया है, वह कहीं न कहीं भारतीय परम्परा से मेल खाती है। यह परम्परा जो रोगी को भी स्वस्थ्य कर दें। दु:खी को भी सुखी कर दे। केवल भारतीयों की परम्परा है जो निम्न पंक्तियों में द्रष्टव्य है–''होली के दिन सज्जन के घर बाबा रामजी और उनके उन सब पागल रोगियों का निमंत्रण था जो किसी हद तक मानसिक स्वास्थ्य लाभ कर चुके थे। सज्जन ने एक बस चार घंटे के वास्ते किराए पर ले ली थी, उसी पर बाबा जी अपनी मंडली के साथ पधारे थे। सज्जन की आलीशान कोठी में अपने गुणों के साथ प्रवेश करते हुए बाबा रामजी सज्जन को साक्षात् शिव के समान लगे। माँ के ठाकुर द्वारे में ही सबको बैठाया। कन्या रसोईघर में थी। सज्जन आज विशेष उत्साह में था। माँ के मृत्यु के बाद आज पहली बार उसके घर में त्योहार सुचारू रूप से मनाया जा रहा है- इस समय बाबा रामजी की मंडली का निमंत्रण है, शाम को कर्नल और महिपाल सपरिवार आयेंगे। सब नौकरों को होली का पकवान और एक-एक रुपया 'त्योहारी' दी जायेगी, साथ में एक-एक कुर्ता धोती और बसन्ती साफा भी।''[4]

'बूँद और समुद्र' उपन्यास में तीन प्रकार की प्रमुख कथा है। पहली कथा ताई की है। लखनऊ के रईस राजबहादुर सर [illegible] की

परित्यक्ता पत्नी हैं जो हवेली में अकेली रहती हैं। ताई के परिवेश से राजा के भाग्य बदल गये लेकिन उसके माँ बनते ही उसे शत्रु के नजर से देखने लगे। उसकी बच्ची आठ महीने की होकर चल बसी। जिसके कारण ताई प्रतिहिंसा में बदल गयी। पति ने दूसरी शादी कर ली।

उपन्यास की दूसरी कथा सज्जन से संबंधित है। सज्जन को विरासत के रूप में अपार धन सम्पत्ति प्राप्त हुई। सामान्य जन-जीवन से परिचय प्राप्त करने के लिए चौक मोहल्ले में ताई का किरायेदार बनता है तभी उसका परिचय प्रगतिशील विचारो की 'वन' कन्या से हुआ। प्रेम और विवाह के संबंध में स्वच्छन्द धारणा रखने वाले सज्जन, वन कन्या के कारण नई धारणा अपनाता है और वे दोनों एक सूत्र में वंध जाते हैं। कथा का तीसरा प्रमुख पात्र महिपाल उसकी पत्नी कल्याणी तथा प्रेमिका शीला को लेकर गतिशील होता है। महिला एक लेखिका है जो प्रगतिशील विचार रखती है। उसने लेखक धर्म को पेशे के रूप में स्वीकार किया है। महिपाल की पत्नी कल्याणी परम्परागत मान्यताओं तथा आदर्शों को मानने वाली एक पतिव्रता अशिक्षित और रूढ़िवादी पत्नी है। महिपाल अपनी पत्नी को तथा अपने परिवार के लोगों को संतुष्ट नहीं कर पाता है।

अमृतलाल नागर ने अपने उपन्यास 'बूँद और समुद्र' में भारतीय खान पान और पकवानों का वर्णन कल्याणी के गृहकला के माध्यम से दर्शाया है जो निम्न पंक्तियों में द्रष्टव्य है-''कल्याणी आज बेहद व्यस्त थी। उसे पकवानों से फुरसत नहीं। कल समधी के यहाँ पकवान जायेंगे। कल्याणी और महिपाल ने पहला संबंध किया है। सो भी भांजी का। कल्याणी सारे आलम यानी सारी विरादरी कम-से-कम मेल भाई-चारे और नातेदारों को यह दिखला देना चाहती है कि वह भी बड़ा आदमी है। उसका पति इतना बड़ा लेखक है कि उसको वीस हजार रुपयों की आमदनी एकमुश्त वैंक की एक चेक से होती है। कल्याणी के चेहरे पर सुहाग का नूर बरस रहा है। नाक में हीरे की कील, कानों में मोती की तरकियाँ, गले में सोने का कॉलर, कमर में सोने की करधनी हाथों में काँच की चूड़ियों के साथ सोने की डायमंडकट वँगड़ियाँ, पैरों के बिछुए भी नए और इस बार सुहाग देवता के आग्रह से घुँघरुदार। कल्याणी ने लखनऊ के खानदानियों से संबंध किया है।''[5]

साहित्य अकादमी से पुरस्कृत 'अमृत और विष' अमृतलाल नागर की अमूल्य कृति है। यह सामाजिक उपन्यास है जिसमें मध्यवर्गीय सामाजिक चेतना को उभारा गया है। इस कथा में नागर जी ने समाज में व्याप्त सुख दुख, अच्छाई बुराई नयी और पुरानी पीढ़ी की विचारधाराओं, आदर्शों एवं मान्यताओं को यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान की है। इस उपन्यास की कथावस्तु अत्यंत विस्तृत है जो समानान्तर कथानकों को लेकर चलती है। इस कथा के केन्द्र में पूर्वजों के इतिहास उनके वर्तमान-जीवन परिवार तथा उनके अपने मानसिक उद्वेलन की कथा है। कथाकार ने अपने पात्रों के माध्यम से वर्तमान सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों के मध्य डूबते-उतारते समाज का यथार्थ चित्रण किया है। यह कथा नागर जी की युग-चेतना, भाव-प्रवणता और बौद्धिकता की प्रखर अभिव्यक्ति को दर्शाता है। कथा नागरजी की प्रतिभा के विस्तार और ज्ञान के उत्कर्ष की चरम उपलब्धि है।

अमृतलाल नागर जी ने अपने इस उपन्यास में लोककल्याणकारी दृष्टि के साथ-साथ समाज के सभी व्यवस्था को कथा का विषय बनाया है। 'अमृत और विष' उपन्यास के पात्र अरविंद शंकर के माध्यम से लोक संस्कृति के दर्शन भी कराये हैं तो उस व्यवस्था से यानी परंपराओं को नकारते हुए आधुनिकता को सहेजा भी है। नागरजी की अपनी अलग पहचान है उन्होंने नयी-पुरानी व्यवस्था में समानता स्थापित कर एक नूतन विषय-वस्तु को पाठक के सामने प्रस्तुत किया है।

कबीर दास की परंपरा में बेवाक कहने वाला यह कथाकार भी लोक-संस्कृति को अपनी कथा में प्रस्तुत करते हैं। कबीर ने हिंदू-मुस्लिम की एकता की वात 14वीं शती में की थी। उस कबीर के इस लोक संस्कृति परंपरा के दृष्टिकोण को अमृत लाल नागर ने अपने उपन्यास में इन पंक्तियों के माध्यम से उद्धृत किया है-

''जब हिन्दू-मुसलमान के संबंध पर ध्यान देता हूँ तो कभी-कभी यह जबर्दस्त उलझन मेरे मन में आती है कि मुसलमानों के साथ खान-पान का मुक्त संबंध स्थापित करके भी क्या हम अपने पिछले जमाने के संबंधों में कुछ अपनी तरक्की कर सकें?''[6]

आध्यात्मिकता में विश्वास रखने वाली नागरजी पाप-पुण्य में भी

विश्वास रखते हैं। [illegible] एवं [illegible] रखने वाले नागर जी ने अपनी दृष्टि [illegible] परंपरा पर भी डाली है। 'अमृत और विष' उपन्यास का पात्र रमेश अपने विवाह के बाद पहली बार ससुराल जाता है और रानी की नई आस्था के प्रति पूरी सहानुभूति रखता है, फिर भी उसकी आस्था उसके साथ मेल नहीं खाती। रमेश को एक जगह उसका अन्याय भी दिखता है और इसी परिप्रेक्ष्य में पाप पुण्य की [illegible] करते हुए वह कहता है

"अरे मैंने बहुतेरा समझाया, पर वो एक नहीं मानती। कहती है, भले ही अब तुम्हारी बात नहीं रही, पर पाप पुण्य तो अपनी जगह पे वैसे ही कायम है। अब तो वे जिस टेक पर टिक गई है, उससे फिलहाल उनका उतरना कठिन ही दिखाई पड़ता है, इसे न्याय अन्याय तुम चाहे जो कह लो।"

'मानस का हंस' सन् 1972 ई. में प्रकाशित अमृतलाल नागर की अनमोल कृति है जो तुलसीदास के जीवन पर लिखा गया है। यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है। यह उपन्यास अलौकिक हृदय को धारण करने वाले तुलसी दास के जन्म से मृत्यु तक की जीवन गाथा है जो इतना सजीव, तर्कसंगत और सशक्त है कि इसमें ऐतिहासिक तथ्य न होते हुए भी वह पूर्णत: यथार्थ प्रतीत होता है। इस उपन्यास में नायक तुलसीदास के अंतर्द्वंद्व, तात्कालीन समाज की मन:स्थिति व रत्नावली की त्यागमयी प्रतिमूर्त्ति का दर्शन है, तो रामभक्ति के दर्शन के साथ काम, वासना को भी दर्शाया गया है। रत्नावली से स्नेह की भावना रखने वाला व्यक्ति उसी तत्परता से उसका परित्याग भी कर रामभक्ति में लीन हो कर वैराग्य का जीवन व्यतीत करता है। रत्नवाली भी भारतीय नारी की भाँति अपने पति के वैराग्य जीवन को स्वीकार कर जीवन यापन करती है। नागर जी ने तुलसी की मनोवैज्ञानिक विशेषता एवं मानसिक विशेषता को पकड़ते हुए उनके राम और काम के द्वन्द्व को दिखाने का सफल प्रयास किया है। इस प्रकार नागर जी ने कथा के मूल में तुलसी के लोकल्याणकारी रूप स्थापित कर अपनी इस कृति को कालजयी बनाया है।

'मानस का हंस' उपन्यास लोक संस्कृति एवं लोकमानस पर आधारित है, इसमें तुलसी के व्यक्तित्व के साथ समकालीन जनमानस के व्यक्तित्व की भी झलक है। हमारे लोक मानस में वे और उनकी उपस्थिति एक देव

व धीरोदात्त नायक के रूप में है जो भारतीय लोक संस्कृति की देन है। राम के सौंदर्य का वर्णन कुछ इस प्रकार नागर जी ने किया है ''आठों पहर तुलसी के आंखों में उनके रामचरित, के विभिन्न दृश्य ही दिखलाई पड़ते थे। इस प्रक्रिया में उन्हें यह अनुभव होने लगा कि राम का बिम्ब भी अब कभी-कभी उनके मन में स्पष्ट होकर झलकता है। कितने सुन्दर हैं राम। सौंदर्य उनकी काया में, बल में, गुणों में है। हाय जो कहीं यह रूप साकार होकर पृथ्वी पर उतर आए तो पृथ्वी पर कैसा आनंद छा जाए। हे रामजी पधारों, एक बार दीन-दुखियों को दर्शन देकर कृतार्थ करो। आओ राम, बस अब आ ही जाओ।''[8]

'मानस का हंस' भारतीय संस्कृति का बोध कराता है जिसका देशकाल यथार्थ है। इसमें तत्कालीन अयोध्या, काशी के बिगड़ते संस्कार, दूषित वातावरण तथा धर्मान्धता का आकर्षण है। महात्मा तुलसी का अविर्भाव ऐसे समय में हुआ। जब प्राचीन संस्कृति मुगलों के प्रभाव से बिखर रही थी। रामबोला से तुलसीदास और महात्मा तुलसीदास का सफर पूर्णरुपेण राम भक्तिमय था। अमृतलाल नागर ने तुलसी के माध्यम से भारतीय भक्तिपरम्परा को नये सिरे से जागृत करने का प्रयत्न किया हैं। जो निम्न पंक्तियों में द्रष्टव्य है-

''तुलसीदास स्वप्न देख रहे थे। हाथ में अरजी का लम्बा कागज लिए तुलसीदास राम जी के महलों की ओर जा रहे हैं। पहले गणेश जी मिलते हैं, उन्हें प्रणाम करते हैं फिर क्रमशः सूर्य शिव-पार्वती, गंगा-यमुना, काशी, चित्रकूट आदि की झलकियाँ एक के बाद एक खुलती चली जाती हैं। भीतर ही ड्योढ़ी पर खास दरबार के आगे हनुमानजी खड़े हैं। तुलसी उन्हें देखकर प्रसन्न होते हैं और अपनी अर्जी का कागज उनकी ओर बढ़ाते हुए कहते हैं- ''इसे रामजी तक पहुँचा दीजिए।''[9]

अमृतलाल नागर लोक से परलोक तक की जीवन-यात्रा को अपने उपन्यासों के कथ्य के केन्द्र में रखते हैं। लोक संस्कृति का संबंध जनजीवन से है। मनुष्य अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए जिन उपक्रमों से गुजरता है आगे चलकर वे उपक्रम रीति-रिवाज और संस्कृति के हिस्से बन जाते हैं। अमृतलाल नागर कभी तुलसीदास के माध्यम से 'मानस का हंस' खोजते हैं, तो कभी सूरदास को याद कर 'खंजन नयन'

का निर्माण करते हैं। इसी तरह 'अमृत और विष' और 'बूँद और समुद्र' जैसी कालजयी रचना तैयार होती है। इन उपन्यासों के कथ्य से यह स्पष्ट है कि अमृतलाल नागर एक बड़े रचनाकार हैं। नागरजी के रचना संसार में लोक जीवन, लोक संस्कृति भरा पड़ा है। साहित्य का मूल आधार लोक ही है इसका विस्तार लोक संस्कृति के माध्यम से होता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जैसे आलोचक भी जनता की चित्रवृति को साहित्य के आधार सामग्री के रूप में स्वीकार में कोई संकोच नहीं करते हैं। बदलते परिदृश्य में नागर जी के साहित्य में वर्णित लोक संस्कृति साहित्य की बाद की पीढ़ी के लिए धरोहर साबित होगी।

सन्दर्भ सूची :

1. लोक संस्कृति और इतिहास, बद्री नारायण, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पहला संशोधित संस्करण, 2010, पृष्ठ संख्या-88.
2. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या-89.
3. हिन्दी का गद्य साहित्य, रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, संस्करण 2016, पृष्ठ संख्या-244.
4. बूँद और समुद्र, अमृतलाल नागर, राजकमल पेपर बैक्स इलाहाबाद, तीसरा संस्करण, 2015, पृष्ठ संख्या-370.
5. उपरिवत्, पृष्ठ संख्या-385.
6. अमृत और विष, अमृतलाल नागर, राजकमल पेपर बैक्स, इलाहाबाद, तीसरा संस्करण 2013, पृष्ठ संख्या-342.
7. उपरिवत, पृष्ठ संख्या-415.
8. मानस का हंस अमृतलाल नागर, राजपाल एण्ड सन्स, प्रकाशन दिल्ली. संस्कण 2015, पृष्ठ संख्या-166.
9. उपर्रिवत्, पृष्ठ संख्या-244.

एसोसिएट प्राफेसर, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

■